मनुस्मृति में वर्णित राज्य की अवधारणा : एक अध्ययन

डॉ0 सुशील कुमार

प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था के विकास के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि पूर्वकाल में अर्थात् मनु के समय एक ऐसा समय था, जब मत्स्य न्याय की बहुलता थी। जिस प्रकार बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को निगल कर अपना आहार बना लेती है, उसी प्रकार उस युग में सबल मनुष्य दुर्बल मनुष्यों को निरंतर कष्ट कर देते तथा नष्ट करते थे। उस समय जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होती थी। मनुष्यों का जीवन अशांतमय था। मनुष्य एवं पशु में कोई अन्तर नहीं था। प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे का दुश्मन था। उस समय न राज्य था, न राजा थे, न ही कोई कानून था और न ही कोई न्याय व्यवस्था थी, न कोई अधिकार थे और न लोगों में कर्त्तव्य की भावना। उस समय सतत् संघर्ष एवं अराजकता की स्थिति थी। मानव जीवन एकाकी, दरिद्र, बर्बर, गन्दा, सीमित तथा निराशाजनक था।

इस पूर्वकालीन प्राकृतिक अवस्था में अराजकता की स्थिति से तंग आकर मनुष्यों ने अपना जीवन, स्वतंत्रता तथा सम्पति की सुरक्षा के लिए एक राजनीतिक संगठन अर्थात् राज्य की आवश्यकता महसूस की। प्राचीन अवस्था में राजनीतिक संगठन के न होने के कारण एक सबल राजा का अभाव था। गलत काम तथा अत्याचार करने वालों को देखने वाला कोई नहीं था।